

23

ईसुरी

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...	- प्रो. चन्दा बेन	3
संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष (संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला)	- प्रो. राजमति दिवाकर	9
2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य (संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य)	- प्रो. सुरेश आचार्य	12
3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता (संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएं)	- प्रो. चन्दा बेन	14
4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य (संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा)	- प्रो. सरोज गुप्ता	18
5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)	- प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू	20
6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध (संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध)	- डॉ. आशुतोष	24
7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)	- डॉ. अफरोज बेगम	32
8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी (संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी)	- डॉ. सुजाता मिश्र	36
9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव (संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों के सांस्कृतिक अध्ययन)	- रतिराम अहिरवार	40

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव	- वृन्दावन राय 'सरल'	45
11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	49
12. लोकजीवन के चितरे कवि : अवधकिशोर जड़िया	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	59
13. जयन्ति ते सुकृतिनो	- टीकाराम त्रिपाठी	66

बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)

डॉ. अफरोज बेगम*

बुन्देलखण्ड की सरजमी पर आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल का जन्म विरगुआं (बुजुर्ग) जालौन (उ.प्र.) में सन् 06 नवम्बर 1930 को हुआ। आपने बी.एससी., एम.ए., एम.एड., साहित्य रत्न, साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। शुक्ल जी स्कूल में प्राचार्य थे और सन् 1990 में सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के उपरान्त आपने वेदाध्ययन, वैदिक शोध तथा उत्तर भारत के प्रमुख शहरों में वैदिक गणिक के प्रो. के. नरेन्द्रपुरी के साथ व्याख्यान और प्रशिक्षण कार्य किया। वैदिक ऋषि अगस्त्य मंत्र, भाष्य तथा बुन्देली भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन में आपने सहलेखन कार्य किया है। शुक्ल जी के कई शोध आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। तथा महर्षि अगस्त्य अलंकरण-2014, संस्कृत सम्मान-2015, स्वामी विष्णु तीर्थ आध्यात्मिक ग्रन्थ सम्मान-2016 भी प्राप्त हो चुका है।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल की कृति 'बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष' बुन्देली भाषा के साहित्य की नयी पहल है। यह शब्दकोश राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल से कुछ समय पूर्व लगभग ग्यारह हजार बुन्देली शब्दों का एक कोश प्रकाशित हुआ था। दुर्गाचरण शुक्ल और कैलाश बिहारी द्विवेदी के

सहलेखन में भी 'बुन्देली भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन' पुस्तक प्रकाशित हुई थी। वर्ष 2015 में इसी संस्थान से प्रकाशित होने वाला ग्रन्थ 'बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोश' लगभग 1500 शब्दों तथा 485 पृष्ठों की सराहनीय रचना है। यह शब्दकोश प्रत्येक बुन्देली शब्द को अपने अन्दर समाहित किया है। इस ग्रन्थ में शब्दों की विकास-यात्रा को वैदिक से वर्तमान काल तक पिरोया गया है। आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति और परम्परा में निहित शब्दों का प्रयोग किया है। वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रन्थों तथा पाणिनी, पतंजलि जैसे विद्वानों के शब्दों से लेकर आज तक के शब्दों का प्रयोग आचार्य जी ने किया है।

आचार्य जी के व्युत्पत्तिकोश की मुख्य विशेषता यह है कि कोश संस्कृत भाषा के मूल शब्द जो कि धातु (क्रिया), ध्वनि परिवर्तन, सन्धि, ऊष्मीकरण, अघोष-घोष, अल्प-महाप्राण, अनुनासिकीकरण के साथ ही शब्दों का ऐतिहासिक विवेचन भी प्रस्तुत करती है।

बुन्देली भाषा के एक शब्द किस प्रकार विभिन्न रूपों में परिवर्तित हो सकते हैं, यह कोशकार ने बखूबी समझाया है। एक शब्द अनेक रूपों में जैसे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, यौगिक, विकारी, सकर्मक, अकर्मक, प्रेरणार्थक, द्विकर्मक,

*हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 9479984231